अनुवादक के गुण एवं दायित्व

अनुवाद आज विश्व के तमाम देशों के मध्य एक बहुदिशागामी तथा बिना किसी अवरोध या रोक-टोक के आवागमन प्रशस्त करने वाला फ्लाईओवर बन गया है । आज अनुवादक को एक ऐसे ईमानदार अभियंता (इंजीनियर) की भूमिका निभानी है जिसमें निष्ठा, समर्पण, जनहित, लोकहित, राष्ट्रहित तथा विश्वहित की सात्विक एवं पावन भावना भी हो । अनुवादक केवल धनार्जन के लिए अनुवाद न कर एक डॉक्टर की तरह कर्तव्यपरायणता तथा एक नर्स की तरह सेवा भाव से काम करना चाहिए । अनुवादक को परकाया-प्रवेश की साधना करनी होती है । अनुवादक को अनुवाद-कार्य में पूर्णतः और समग्रतः रहते हुए भी अदृश्य रहना होता है ।

अनुवादक के गुण (Translator's Qualities)

1. **भाषा प्रभुत्व** (Language influence) - अनुवादक को स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की प्रकृति, व्याकरणिक व्यवस्था शैली तथा अनुप्रयोगात्मकता का अधिकारिक ज्ञान होना चाहिए । अनुवादक को स्त्रोत भाषा के मुहावरों लोकोक्तियों की, विशिष्ट प्रयोगों की, सूक्तियों-कथनों की गहन समझ बनानी चाहिए ।

2. **बहुज्ञता तथा विवेकशीलता** (Well informed with intelligence) - अनुवाद कार्य किसी सामान्य या अतिसामान्य अथवा अल्पज्ञ की ओर से संपन्न होने वाला सामान्य कार्य नहीं है । जो बहुज्ञ और विवेकपूर्ण होता है वही आदर्श अनुवाद कर सकता है । अनुवादक को स्त्रोत सामग्री का पूरा-पूरा ज्ञान होना अपेक्षित होता है । संप्रेष्य विषय की सारी बारीकियाँ उसे ज्ञात होना जरूरी है तभी उसका संप्रेषण सही हो सकता है । मूलभाषा के संदर्भ, प्रसंग, परिवेश, प्रयोजन, प्रासंगिकता, तार्किकता तथा सूचनात्मकता आदि को पहचानने की क्षमता किसी बहुज्ञ व्यक्ति में ही हो सकती है । साथ ही उसका विवेक भी अनुवाद कार्य में सहायक बन जाता है ।

3. **सतर्कता** (Careful) - सफल अनुवादक आरंभ से अंत तक सतर्क रहता है । यह सतर्कता पाठ-चयन, पाठ-पठन से लेकर मूल से मिलान अर्थात् तुलना तथा संशोधित भाषांतरण तक आवश्यक होती है । मूल लेखन में लेखक जितना सतर्क रहता है उतना ही अनुवादक को भी सतर्क रहना आवश्यक है । इससे अनुवाद कार्य स्तरीय बनता है ।

4. **संदेह निवारणकर्ता** (Ability of doubt clear) - अनुवादक सामने बहुत सारे समस्याएँ आते हैं उन्हें निवारण करने की क्षमता होनी चाहिए ।

5. **प्रतिभा** (Intellect) - प्रतिभा मनुष्य को जन्म से प्राप्त सहज देन है, यह सफल अनुवाद करने में सहायता होती है । किसी भी बात को चाहे वह सीधी-सरल हो या कठिन, समझलेने तथा कुशलता से अभिव्यक्त करने के लिए प्रतिभा का होना अनिवार्य है ।

6. **समाज एवं संस्कृति का ज्ञान** (Social & cultural knowledge) - अनुवादक को दो भाषाओं के प्रभुत्व के साथ-साथ स्त्रोत तथा लक्ष्य भाषा-भाषियों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषयों से संबंधित आवश्यक जानकारी होना भी अपेक्षित है । समाज की संस्कृति, विरासत, खान-पान, आचार-विचार, ईद-त्योहार, पूजा-पाठ, रूढी-परंपराएँ, वेशभूषा, रिश्ते-नाते आदि विषयों का परिचय होना जरूरी होता है ।

7. **ज्ञान-विज्ञान तथा मनोविज्ञान का परिचय** (knowledge of Science & psychology) - अनुवादक को अद्यतन एवं अधुनातन खोजों, परिवर्तनों, जानकारियों तथा उपलब्धियों का ज्ञान जुटाते रहना चाहिए । यह सतत अध्ययनशीलता से, समसामयिक जानकारियों से तथा सूचना-तंत्र के माध्यम से ही संभव हो सकता है ।

अनुवादक के दायित्व (Responsibility) -

1. **श्रद्धा एवं निष्ठा** (belief & Faith) - अनुवादक को विषय के प्रति अभिरुची होनी चाहिए । मूल लेखक के विचारों को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक पहुँचाने की निष्ठा होनी चाहिए ।

2. **कडी साधना** (Hard work) - अनुवादक को धैर्यवान, लगनशील, निष्ठावान, विवेकवान तथा अथक श्रम-साधक होना चाहिए ।

3. **सृजन-क्षमता** (Creative ability) - अनुवादक को रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता के गुणों को भी आत्मसात करना चाहिए । नए शब्दों के आगमन, गठन, प्रयोग-अनुप्रयोग से भी, शब्द-निर्माण की प्रक्रिया तथा आवश्यकता से भी अनुवादक को अवगत होना चाहिए ।

4. **तटस्थता** (Neutral) - अनुवादक को परकाया प्रवेश की साधना करनी होती है । परकाया-प्रवेश की यह शर्त होती है कि स्वयं को बाहर छोडकर दूसरे शरीर (रचना या रचनाकार) के भीतर प्रविष्ट होना होता है ।

5. **निष्पक्षता** (Impartial) - अनुवाद को पाठक और मूल इन दोनों के साथ न्याय करना चाहिए । अनुवादक को त्वरित बुद्धि वाला, मानसिक उपस्थिति वाला, पाठक के स्तर तथा अपेक्षा को समझने वाला, मनन-चिंतन करने वाला तथा पूर्वाग्रह या दुराग्रह से मुक्त रहने वाला होना चाहिए तभी वह सुपाठ्य एवं सहज अनुवाद कर सकता है ।

6. **वस्तुनिष्ठता** (Objectivity) - अनुवादक को संवेदनशील तार्किक, सहृदय तथा विचारक दोनों रूपों में तालमेल बनाए रखना चाहिए । ऐसा करके ही अनुवादक मूल रचना और रचनाकार के साथ न्याय कर पाता है ।

अनुवादक की समस्याएँ एवं समाधान

1. **लोकोक्ति और मुहावरों का अनुवाद आसान नहीं होता -** लोकोक्तियाँ और मुहावरे भाषा को जितना अधिक प्रभावशाली बनाते हैं अनुवाद करते समय उतना ही प्राणलेवा होते हैं । सर्व प्रथम लोकोक्ति तथा मिहावरे के बीच का अंतर समझना अनुवादक के लिए अत्यंत आवश्यक है । दोनों का अंतर समझाते हुए डॉ. रीतारानी पालीवाल ने लिखा है - "**लोकोक्ति में एक पूर्ण सत्य या विचार की अभिव्यक्ति होती है । मुहावरा स्वतंत्र वाक्य नहीं होता ।** वह किसी वाक्य में रखे जाने का सहारा खोजता है । उदा - ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है । एक लोकोक्ति है । टेढी खीर, दाँत खट्टे करना आदि मुहावरे हैं । मुहावरे और कहावते प्रायः किसी अनुभव सिध्द कहानी का सार होते हैं ।"[1]

   कहावते और मुहावरों का अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा के समतुल्य कहावते मुहावरो का उपयोग करना सही होगा । असाध्यता की स्थिति में भाषानुवाद, अर्थानुवाद, भावानुवाद या मूलरूप भी हो सकता है ।

मुहावरों के उदाहरण -

रँगे हाथों पकड़ा जाना ।	To be caught redhand.
जीवन के उतार-चढ़ाव ।	Ups and down of life.
बच्चों का खेल, बाएं हाथ का खेल ।	Children's play.
घड़ियाली आँसू, मगरमच्छ के आंसू ।	Crocodile's tears.
सफेद झूठ ।	White lie.

लोकोक्ति या कहावतों के उदाहरण -

खाली दिमाग शैतान का घर ।

An empty mind is devil's workshop.

आवश्यकता आविष्कार की जननी है ।

Necessity is the mother of invention.

एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है ।

One fish infacts the whole water.

अंत भला सो भला ।

All' well that ends well.

एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

---

1. अनुवाद प्रक्रिया – डॉ. रीतारानी पालीवाल पृ. सं. 96, प्र. सं. 1982

It requires to hands to clap.
बितिद्दन्ने बेळेदुको ।
As you sow, so shall you reap.

2. **लक्ष्यभाषा में शब्दों की कमी** - इन समस्याओं का समाधान सरल नहीं है । बहुत से शब्दों के समानार्थक शब्द दूसरी भाषा में होते ही नहीं हैं । जैसे- नीम के लिए अंग्रेजी भाषा में तथा लिली के लिए हिंदी भाषा में शब्द खोजना पडता है । यह परेशानी तब और बढ जाती है जब प्रशासनिक शब्दावली का अनुवाद करना पडता है । ऐसे व्यक्तियों को इस तरह के अनुवाद में कृत्रिमता अनुभव होती है । तब इनकी जुबान पर मूलभाषा का शब्द चढ चुका होता है ।
   उदा - यूनिवर्सिटी को सही या गलत ढंग से सभी बोल लेते हैं, कचहरी, मदरसा, फालतू आदि प्रचलित शब्द रहे हैं । पालतू पशुओं को मवेशी कहा जाता रहा है । इस तरह के प्रचलित शब्दों के लिए जहाँ तक हो नये शब्दों की खोज नहीं करनी चाहिये । लक्ष्यभाषा में शब्दों की कमी को दूर करने के लिए शब्दकोशों का सहारा लेना चाहिए । इससे समानार्थ, समीपार्थ, व्याकरणिक विचार समझ में आते हैं ।

3. **भाषा की अपनी विशेषताएँ होती हैं** - हर एक भाषा की अपनी विशेषताएं होती हैं, जो अन्य भाषा से कुछ या पूर्णतः भिन्न होती हैं । अनुवाद करते समय अनुवादक को यह ध्यान रखना होगा कि मूल भाषा के भाव को अनूदित भाषा में पूर्णतः उतारा गया हो । पूर्णतः भाव का मतलब है कि मूल भाषा की सामग्री व अनूदित भाषा की सामग्री पढने से यह प्रतीत नहीं होना चाहिए कि यह अनूदित कृति है । कम से कम स्रोत भाषा व लक्ष्य भाषा में निकटता होनी चाहिए । समानता की यह निकटता जितनी अधिक होती है, अनुवाद उतना ही अच्छा और सफल होता है ।
   उदा- Uncle, Aunty के लिए हिंदी में बहुत से शब्द मिलते हैं । चाचा, ताऊ, फूफा, मामू, खलई आदि । चाची, ताई, फूफी, मामी, लाला आदि ।

4. **कविता का अनुवाद कठिन होता है** - कविता को अपनी भाषा में पढकर या सुन कर आनंदित होते हैं । यही आनंद अनूदित कविता में भरना दुस्साहस का काम है । समान भाव और विचार व्यक्त करने वाले शब्द या वाक्य को खोजना भावनाओं का प्रकाशन स्वतः प्रवाह में होता चलता है । हम धारा के किसी क्षण में रुककर तल में अन्तर्निहित भावना को देखने का प्रयास नहीं करते । इसके लिए उस भाषा की भावना का ज्ञान अपेक्षित होता है । उसके अनन्तर उसी के समकक्ष भाव और विचार व्यक्त करने वाले शब्द या वाक्य को लक्ष्यभाषा में खोजना पडता है ।

यह का कार्य उसी तरह सफल है जिस तरह समथिंग इज बेटर देन नथिंग । प्रक्रिया के संदर्भ में हम इनके उदाहरण देखेंगे ।

उदाहरण -

“नीचे जल था, ऊपर हिम था,	“Below him was water, snow above,
एक तरल था, एक सघन था,	Liquid the one, the other solid was,
एक तत्व की ही प्रधानता	One element along dominion held
कहो उसे जड या चेतन ।”	Call it inanimate or animate.”

5. **भिन्न परिवार की दो या दो से अधिक भाषाएँ प्रशासन में कार्यरत रहने पर** - हमारे देश के संदर्भ में ऐतिहासिक दृष्टि से यह समस्या ईस्ट इंडिया के समय से भारत में ही जन्म लेकर विकसित हुई । मैकाले के प्रयासों से भारत में अंग्रेजी को प्रशासन की भाषा होने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके कारण प्रशासनिक कामकाज में अनुवाद शिथिल बना दिया गया था । सामान्यतया ऐसे प्रत्येक देश में अनुवाद की समस्या आती है जहाँ दो या दो से अधिक भाषाएँ प्रशासन में कार्यरत होती हैं । स्विट्‌जरलैंड इसका आदर्श उदाहरण है, वहाँ प्रशासन में चलने वाली तीनों (जर्मन, फ्रेंच और इतालवी) भाषाएँ एक ही परिवार की होने के कारण भारत के समान जटिलता नहीं उत्पन्न करतीं ।
   उदा - भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना आसान होता है, इन भारतीय भाषाओं को विदेशी भाषाओं में अनुवाद करना कठिन होता है ।
6. **एक भाषा से अनूदित सामग्री का दूसरी भाषा में अनुवाद** - स्त्रोतभाषा एक से लक्ष्यभाषा एक में और लक्ष्यभाषा एक से लक्ष्यभाषा दो में अनुवाद होता है । तब दो कमजोरियाँ अनुवादक की गुणवत्ता(Quality) में बाधा डाल सकती हैं -
   अ) स्त्रोतभाषा एक से लक्ष्यभाषा एक में अनुवाद करते समय लक्ष्यभाषा का अनुवादक अपनी भाषा में स्त्रोतभाषा से अंतर का अनुभव करता है ।
   आ) लक्ष्यभाषा एक से लक्ष्यभाषा दो तक आते-आते मूल रचना के भाव का थोडा बहुत मार्मिक अंश और सौष्ठव नष्ट हो सकता है ।
   अनूदित सामग्री का अनुवाद करते समय जहाँ कहीं छोटा सा संदेह होता है तो प्रथम मूल भाषा की सामग्री का सहारा लेना चाहिए । मूल सामग्री के समतुल्यता के सिध्दाँत को अपनाने से अनूदित रचना में गुणवत्ता बनी रहती है ।

अनुवादक के सहायक साधन (Translator's supporting Tools)

शब्दकोश (Dictionary) - एक अनुवादक को अनुवाद कार्य करने के लिए शब्दकोश सबसे मजबूत साधन है । स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा का द्विभाषा शब्दकोश अनुवादक के लिए अभय हस्त बना रहता है ।

विषय विशेषज्ञ (subject expert) - शब्दकोश से अनुवादक संतुष्ट न होने पर विषय विशेषज्ञों से जानकारी हासिल कर सकता है । विषय विशेषज्ञ उस क्षेत्र या वृत्ति से जुडा रहता है । उसे उसकी अच्छी जानकारी रहती है ।

मशीन (internet) इंटरनेट पर वेबसाइट और एप अनुवाद के लिए उपलब्ध हैं । इनकी सहायता भी ले सकते हैं ।